Written by कुमार सौवीर
Saturday, 01 April 2017 11:12

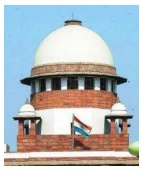

: □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□, □□□□ □□□□ □□□□ □ : □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□-□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ : □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ :

□□□□□□ □□□□□□

□□□□ : हनि्दुस्तान के हर-एक अभिभावक के दिल पर हर महीने एक जोरदार थप्पड़ पड़ता है, कि अभिभावक बुरी तरह बिलबिला जाता है। लेकिन ऐसे तमाचों को बर्दाश्त कर लेता है अभिभावक। यह तमाचे उसके बच्चों के स्कूल के प्रबंधक के होते हैं। करारे तमाचे। इतना ही नहीं, इन तमाचों के बदले हर अभिभावक ऐसे स्कूली प्रबंधकों के हाथों में नोटों की गड्डी भी थमा देता है। राजी-खुशी होता है यह भुगतान। सिर्फ इस राहत वाले आश्वासन के लिए कि उसका बच्चा पूरी तरह सुरक्षित रहेगा, उसका भविष्य सुनहला बना दिया जाएगा और बाद में वह उसके सपनों की जिन्दगी में सैर कर सकेंगे। लेकिन इसी सपने, राहत और आश्वासनों के गुबार में अभिभावक लगातार लुटता-पिटता ही रहता है। स्कूलों की मांग लगातार बढ़ती ही जाती है और जल्दी ही हर अभिभावक किसी गधे की तरह अपने बच्चों को पालने नुमा मजबूरी में बिक्रितबाह होना शुरू कर देता है।

यह हकीकत है इस देश के अभिभावकों की। बच्चों के सपनों को सुधारने-तराशने की आपाधापी में हर अभिभावक यह भूल जाता है कि उसके दायित्वों के साथ ही साथ उसके हक भी इस देश में मौजूद हैं। इन्हीं हकों को जान-पहचान कर कोई भी अभिभावक अपने बच्चों के लुटेरे स्कूली प्रबंधकों की गुण्डागर्दी, लूट और माफियागिरी पर तत्काल अंकुश लगा सकता है। मसलन, नौ साल पहले सर्वोच्च न्यायालय से जारी हुआ एक आदेश, जिसमें अभिभावकों के सुकून की गारंटी दी गयी है।

बदायूं के जांबाज पत्रकार और नवयुवक □□□□□ □□□□□□□ ने आम बेहाल अभिभावकों को त्राण दिलाने के लिए बाकायदा एक अभियान छेड़ दिया है। अब आम अभिभावकों की यह जिम्मेदारी है कि वे लोग भी □□□□□ □□□□□□□ के अभियान में सहभागी बनें, और स्कूली प्रबंधकों की लूट का विरोध करने के लिए अपना योगदान करें। □□□□□ का संकल्प ऐसे ही स्कूली प्रबंधकों की लूट पर अंकुश और अराजकता पर स्थाई प्रतिबंध लगाना ही है।

इसके लिए राहुल ने एक अपील जारी की है। आप भी देखिये:- आप मित्र लोगो से एक मदद चाहिए, 9 साल पहले सुप्रीम कोर्ट ने एक आर्डर किया था, स्कूल के बारे में।

जिसमें साफ-साफ हुक्म जारी किया गया था कि:-

Written by कुमार सौवीर
Saturday, 01 April 2017 11:12

1. स्कूल 11 महीने की फीस लेंगे,

2 . स्कूल तमिाही केआधार पर फीस न लेंगे□ बल्कि चक्र महीने केहसिाब से लेंगे□

3. स्कूल 5 साल से पहले ड्रेस नही बदल सक्ते है□

4. स्कूल बाले कसिी फक्सि दुकान से कताबे लेने को बाध्य नही कर सक्ते है□ साथ ही स्कूल से भी कताबे बक्री नही कर सक्ते है□

5. जसि बोर्ड से मान्यता है, उसमे बोर्ड से मान्यता बाली कताबे ही प□ाई जा□ , यह नही प्राइवेट लोगो की कताबें□

सर अगर यह आर्डर मलि जाये, बहुत सहूलयित होगी□

क्योकि बूच□ खाने भी अगर उच्चतम न्यायालय केआदेश पर रोकलग सक्ती है□ तो इन कुक्कुरमुत्तों की तरह उगने बाले इन प्राइवेट स्कूल पर क्यो नही□

आप लोगो से माफी चाहता हूं, आपको टैग करने केलि□ □

सुप्रीमकोर्ट ने क्या रूलगि बनाई थी ?

और तो और नजिी स्कूलों की मनमानी केचलते तकरीबन 9 साल पूर्व सुप्रीम कोर्ट ने अपने □कआदेश में गर्मियों की छुट्टी में ली जाने वाली फीस पर प्रतबिन्ध लगते हु□ कहा था कि इस दौरान जब स्कूलों में प□ाई नहीं होती है तो उसकी फीस क्यों ली जाती है. मालूम हो कि कोर्ट ने छुट्टी केदौरान ली जाने वाली फीस पर रोकलगते हु□ प्राइवेट स्कूलों और मशिनरी स्कूलों पर ये रोकलगायी थी. यही नहीं इसकेसाथ इस तरह केस्कूलों और कालेजों पर लगाम कसते हु□ कोर्ट ने ये भी आदेश पारति कयि थे कि प्राइवेट स्कूल और कालेज अभविावकों को इस बाबत मजबूर नहीं कर सक्ते कि वह □कवशिष दुकान से ही अपने बच्चों कि कॉपी-कताबें खरीदें.

जब 11 महीने की फीस का अदालती फैसला है, तो फिर स्‍कूलों में यह लूट कैसी

Written by कुमार सौवीर
Saturday, 01 April 2017 11:12

यही नहीं, स्कूल और कालेज में हर साल बदली जाने वाली ड्रेस पर रोक लगते हुए 5 साल से पहले ड्रेस न बदले जाने के आदेश प्राइवेट स्कूल और
कालेजों के प्रबन्धन तन्त्र को दिए थे. बावजूद इसके स्कूल और कालेजों के प्रबन्धतन्त्र अपनी मनमानी पर आमादा हैं. फिलहाल दल के नेताओं ने यूपी के सीएम योगी आदित्य नाथ से सुप्रीम कोर्ट की आयी रूलिंग का अनुपालन कराये जाने की मांग की है.

(अपने आसपास पसरी-पसरती जा रही अराजकता, लूट, भ्रष्‍टाचार, टांग-खिंचाई और किसी प्रतिभा की हत्‍या की साजिशें किसी भी शख्‍स के हृदय-मन-मस्तिष्‍क को विचलित कर सकती हैं। हर शख्‍स ऐसे हादसों पर बोलना चाहता है। लेकिन अधिकांश लोगों को पता तक नहीं होता है कि उसे अपनी प्रतिक्रिया कैसी, कहां और कितनी करनी चाहिए।

अब आप नि:श्चिंत हो जाइये। आइंदा के लिए आप अपनी सारी बातें हम www.meribitiya.com पर आपको सीधे हमारे पास और हम तक पहुंचाने का रास्‍ता बताये देते हैं। आपको जो भी अगर ऐसी कोई घटना, हादसा, साजिश की भनक मिले, तो आप सीधे हमसे सम्‍पर्क कीजिए। आप नहीं चाहेंगे, तो हम आपकी पहचान छिपा लेंगे, और आपका नाम-पता किसी को भी नहीं बतायेंगे।

आप अपनी सारी बातें हमारे मोबाइल:- 9415302520 पर बता सकते हैं। आप चाहें तो पूरी बात हमारे ईमेल पर भी विस्‍तार से भेज सकते हैं। हमारा ई-मेल पता है:-

kumarsauvir@gmail.com

सम्‍पादक:- kumarsauvir@gmail.com)

3 / 3